CREATING AN INCLUSIVE SCHOOL

Prep By :-

Mr. D. K. Singh.

DEVENDRA SIR

ONLINE CLASSES -: G.D. MISHRA B.Ed COLLEGE BUXAR

B.Ed. 2018-20 DATE- 23.04.2019

Sub- C-10 - CREATING AN INCLUSIVE SCHOOL

प्रश्न: समावेशी शिक्षा में शिक्षक के लिए आवश्यक दक्षताओं का विश्लेषण करें।

Ans. समावेशी शिक्षकों की दक्षताएँ निम्नलिखित हैं जो इस प्रकार है-:

1. विषयवस्तु सम्बंधी दक्षताएँ -:

किसी भी शिक्षक को अपने पढ़ाएँ जानेवाली विषय में पुरा अधिकार हो। यही नही उसे सम्बन्धित विषयों की भी जानकारी हो। अध्यापक जितना ही विषय पर अधिकार रखता है उतना ही छात्र का प्रिय होता है। विषय पर अधिकार रखनेवाला ही अधिगम करने में सक्षम होगा। इस क्रिया उसके लिए आनंद की क्रिया हो जाती है सीखने की योजना बनाते समय भी छात्राध्यापकों को संदर्भ पुस्तकों का उल्लेख करने से आधुनिक एवं परिवर्द्धित ज्ञान का विकास होता है।

2. संकल्पना को स्पष्ट करने की दक्षता -:

अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि जटिल संकल्पनाओं को सरल ढंग से स्पष्ट करने की दक्षता होनी चाहिये। अध्यापन कार्य प्रारंभ करने से पहले हमें छात्र की आवश्यकताओं को समझ लेना चाहिये। तभी प्रभावकारी ढंग से अध्यापन प्रारम्भ हो सकेगा। केवल विषय-वस्तु की संकल्पनाओं को समझ लेने से काम नही चल पाता बल्कि शिक्षण-विधियों की संकल्पनाओं में भी दक्षता होनी चाहिये।

3. शिक्षण- अधिगम सामग्री निर्माण में दक्षताएँ -:

अधिगम के सम्प्रेषण के लिए आवश्यक हैं कि छात्राध्यापक ऐसे उपकरण बनाने में दक्ष हो जिसे बालक विषयवस्तु को शीघ्रता से सीखे।

जैसे -: घड़ी न होने पर नाड़ी का धड़कन से समय का मापन करना। एक दक्ष अध्यापक अपने छात्रों को हाथ से बनाये गये अनेक उपकरण बनाने की प्रेरणा दे सकता है। घरेलु सामग्री से मोटर आदि के मॉडल बनाये जा सकते है। जल विश्लेषण या जल अपघटन का उपकरण सामग्री आसानी से बन सकता है। लेन्स पर आधारित दूरबीन, सौर ऊर्जा के उपयोग सम्बंधी उपकरण, गुरुत्वाकर्षण संबंधी खिलौने छात्रों को प्रेरणा द्वारा बनवाये जा सकते है। विद्यालय में विज्ञान मेले का आयोजन विज्ञान प्रदर्शनी एवं संग्रहालयों का आलोकनार्थ भ्रमण वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने में लाभदायक होता है।

4. सम्प्रेषण सम्बंधी दक्षता -:

शिक्षण कार्य के लिए सबसे मुख्य कार्य जो अध्यापक को करना होता है विषय-वस्तु का संम्प्रेषण करना अर्थात ज्ञान को छात्रों तक पहुँचाना जिससे वे ज्ञान को हृदयंगम कर सके। तभी अधिगम का स्तर बढ़ता है। ज्ञान स्मृति पटल से चिंतन पटल तक ले जाता है। जहाँ सम्प्रेषण विधियों को अपनाने पर अध्यापक को मनोवैज्ञानिक विधियों का भी ज्ञान होना जरूरी है, उसे अपनी योग्यता क्षमता के अलावा छात्रों की रुचि योग्यता, पूर्वज्ञान एवं उन परिस्थितियों को जानना भी आवश्यक होता है जो सम्प्रेषण को बढ़ाती है।

5. भाषायी प्रतिपटुता -:

अध्यापक में यह गुण जो आवश्यक रूप से होना चाहिये वह है उसका भाषायी ज्ञान एवं मृदुभाषिता। किस समय काल परिस्थिति में किससे बात करनी चाहिये इसका ज्ञान एक अच्छे अध्यापक को होता है।

6. मूल्यांकन आधारित दक्षताएँ :- शिक्षण में मूल्यांकन का अति महत्व है बिना इसमें दक्षता किये अध्यापकीय दक्षता प्राप्त नही किया जा सकता है। मूल्यांकन गुणात्मक तथा परिमाणात्मक दोनो होता है। गुणात्मक मूल्यांकन को परिमाणात्मक रूप दिये बिना दक्षता प्राप्त नही हो सकता है। एक सफल अध्यापक को मूल्यांकन की आधुनिक विधियों की जानकारी आवश्यक है। जो साध्यकीय गणना से परिचित हो। मूल्यांकन करते समय मूल्यांकन किये गये प्रश्न उनके प्रकार व मापन के उद्देश्य से भी अध्यापक को अवगत होना चाहिये। दीर्घउत्तरीय प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न के अलावा ज्ञानात्मक, बोधात्मक प्रश्न, इन्टरव्यू, प्रश्नावली, सर्वे अनुसंधान विधियों का तकनीकी ज्ञान होना आवश्यक है।

7. मूलभूत मूल्यों की प्रतिबद्धता -: आजकल समाजिक क्षेत्र में मूल्यों का क्षरण हो रहा है। घोटाला घुसखोरी बेईमानी यौनशोषण जैसी गन्दगी हमारे समाज में तेजी से फैल रही है। ईमानदारी, सत्यनिष्ठ, सेवाभाव समयबद्धता का ग्रामजीवन में अभाव हो रहा है। अध्यापक को अप्रत्यक्ष रूप से उन गुणों को बालकों में सम्प्रेषित करना चाहिये। इसके लिए सबसे जरूरी गुण है वह है "समयपबद्धता। अध्यापक कक्षा में नियमित रूप से समय पर पहुँचे तभी छात्र भी समय पर कक्षाओं में पहुँचेंगे।

8. अधिगम कर्ता के प्रति प्रतिबद्धता -:

अध्यापक का किसी न किसी रूप में उसका दायित्व होता है कि वह बालक को अधिगम प्राप्त करें। विद्यार्थियों को यह महसूस होना चाहिये कि अधिगम कोई कष्टकारी कार्य न होकर रुचिकर क्रिया है। बालक में उत्सुकता का गुण जन्मजात होता है, वह अपने संसार के बारे में बहुत कुछ जानने की इच्छा रखता है। उसकी उत्सुकता को शांत करने के लिए अध्यापक तर्कसम्मत विधि से उत्तर देते है समझाते है।

= o =

THANK YOU…